हनुमान् विरचित हनुमन्नाटक की

रामकथा

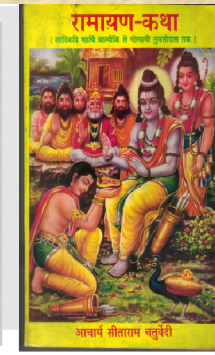

(अंक संख्या 104 से आगे)

आचार्य सीताराम चतुर्वेदी

यह हमारा सौभाग्य रहा है कि देश के अप्रतिम विद्वान् आचार्य सीताराम चतुर्वेदी हमारे यहाँ अतिथिदेव के रूप में करीब ढाई वर्ष रहे और हमारे आग्रह पर उन्होंने समग्र वाल्मीकि रामायण का हिन्दी अनुवाद अपने जीवन के अन्तिम दशक (80 से 85 वर्ष की उम्र) में किया वे 88 वर्ष की आयु में दिवंगत हुए। उन्होंने अपने बहुत-सारे ग्रन्थ महावीर मन्दिर प्रकाशन को प्रकाशनार्थ सौंप गये। उनकी कालजयी कृति रामायण-कथा हमने उनके जीवन-काल में ही छापी थी। उसी ग्रन्थ से अध्यात्म-रामायण की कथा हम क्रमशः प्रकाशित कर रहे हैं।

- प्रधान सम्पादक

जब लंकाके भवनकी अटारी पर बैठा हुआ रावण रामकी सेनाको देखने लग रहा था तभी मन्दोदरीने आकर रावणको बहुत समझाया कि रामसे वैर मत मोल लो। पर रावण किसकी सुननेवाला था ! उसने शुक और सारण नामके दो दूत रामकी सेनाकी थाह लेने पठा भेजे। रावण के मन्त्री विरूपाक्ष और महोदरने भी रावणको बहुत समझाया पर उन सबकी नीतिभरी बातोंका भी रावणपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मन्दोदरीने तो यहांतक आकर कह दिया कि बताओ, सीता क्या मुझसे भी अधिक सुन्दर है ? फिर भी रावण टससे मस न हुआ।

तब रावणने माया-जालसे सीताको वशमें करनेका निश्चय किया। उसने राम और लक्ष्मणके कटे और रुधिरसे सने सिर सीताके सामने ला दिखाए जिन्हें देखते ही सीता तो हाय हाय कर उठीं और प्राण त्याग करनेको तैयार हो गईं। पर उसी समय आकाशवाणी हुई कि यह रामका सिर नहीं है, इसे छूना भी मत। यह तो रावणकी मायाका खेल है। यह सुनते ही रावण और वे दोनों सिर झट आकाशमें उड़कर छूमन्तर हो गए। तब सरमाने आकर सीताको बहुत सान्त्वना देकर और समझाकर शान्त किया।

जब मायासे भी काम न चल पाया तब रावण कामान्ध होकर सीताको अपना पराक्रम सुना-सुनाकर उन्हें फुसलानेका प्रयत्न करने लगा किन्त सीताने उसे ऐसा झाड़ा और लताड़ा कि वह उलटे पैरों भागता दिखाई दिया। सीताने कहा कि मेरे कण्ठको या तो रामके भुजदण्ड छ पावेंगे या तेरी कठोर तलवार-

प्रभु भुजदण्ड कि तव असि घोरा। सुन सठ यह प्रमान पन मोरा।

विरम विरम रक्षः किं वृथा रल्पितेन स्पृशति नहि मदीयं कण्ठसीमानमन्यः।

रघुपतिभुजदण्डादुत्पलश्यामकान्तेर्दशमुख भवदीयो निष्कृपो वा कृपाणः ।।

वहाँसे लौटकर रामका रूप बनाकर रावण अपने दोनों हाथों में अपने (रावणके) पाँच-पांच सिर लेकर सीताके सामने जा पहुँचा। उसे देखकर और राम समझकर ज्यों ही हर्षसे सीताने उससे मिलनेको बढ़कर कहा कि ये रावणके सिर उठा फेंकिए त्यों ही रावण नपुंसक होकर 'हे शिव हे शिव !' कहता हुआ तत्काल अन्तर्धान हो गया। तब तो रावणको राम-वेशधारी जानकर सीताको बड़ी चिन्ता हुई कि ऐसी मायाके चक्कर में मैं रामको भला कैसे पहचान पाऊँगी। उसी समय आकाशवाणी हुई कि जब मन्दोदरी जाकर रामके बाणोंसे मरे हुए रावणका चुम्बन करती होगी तब तुम रामको पहचान लोगी।

सुबेल पर्वतपर बैठे हुए रामने अंगदसे पूछा कि क्या रावणसे सन्धि करना ठीक होगा? अंगदने कहा-नहीं, यह कभी भी मत कीजिएगा। उसी रातको सोते हुए राम-लक्ष्मणको मार आनेके लिये रावणने प्रभजनी नामकी एक राक्षसी पठा भेजी। वहाँ वह देखती क्या है कि सदर्शन चक्र घूम-घूमकर उनकी रक्षा कर रहा है। उसी समय अंगदको जागा हुआ जानकर ज्यों ही वह राक्षसी निकल भागनेको लपकी त्यों ही अंगदने उसे वहीं पटककर उसका कचूमर निकाल डाला।

महोदरने रावणको फिर समझाया कि अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है, आप सीताको लौटा दीजिए। किन्तु रावण तो यह सुननेको तैयार ही नहीं था। इसी बीच सरमाने सीताको विमानमें बिठाकर रामके दर्शन जा कराए।

रामकी सेनाको देखकर रावणने कुम्भकर्णको जगानेका आदेश दे दिया। किसी-किसी प्रकार कुम्भकर्ण जागा और खा-पीकर रावणके पास आकर समझाने लगा कि रामको जानकी दे देनी चाहिए। जब उसकी बात भी रावणने नहीं मानी तब वह युद्ध के लिये निकल पड़ा और अन्तमें भयानक युद्धके पश्चात् वह भी मार डाला गया।

कुम्भकर्णकी मृत्युसे दुखी होकर रावणने अपने पुत्र इन्द्रजित्को यद्धके लिये भेज दिया जिसने जाते ही माया-युद्धके द्वारा राम-लक्ष्मणको नाग-पाशसे बाँध दिया। उस समय रावणकी आज्ञासे सरमा पुष्पक विमानपर बैठाकर सीताको राम-लक्ष्मणकी दशा जा दिखा आई जिसे देखकर तो जानकीकी घिग्घी बँध गई। इसी बीच गरुडने आकर सब नाग-पाश काटकर राम-लक्ष्मणको स्वस्थ कर दिया। गरुडके चले जानेपर मेघनादने एक माया-सीता बनाकर उसे समर-भूमिमें ले जाकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिखाए। यह देखकर तो राम लक्ष्मण भी व्याकुल हो उठे। फिर निकुम्भिल पर्वतपर वट-वृक्षकी जड़में बहेड़ेकी सामिधासे मेघनाद अपने शरीरका मांस हवन करने लगा। किन्तु हनुमान्ने आकर उसका वह यज्ञ भी विध्वस्त कर डाला और तभी लक्ष्मणने अपने बाणसे मेघनादका मुकुट-सहित सिर काटकर रावणके हाथोंमें ले जा उछाल गिराया।

मेघनादकी मृत्युसे क्षुब्ध रावणने लक्ष्मणपर अपनी वीर-नाशिनी शक्ति उठा चलाई.किन्तु हनुमान्ने उसे बीचमें ही पकड़कर समुद्रमें तोड़ फेंका। हनुमान् के वहाँसे हटते ही रावणने लक्ष्मणपर फिर ऐसी अपनी शक्ति चलाई कि वह उनका हृदय भेदकर पातालमें जा धंसी। यह देखकर विभीषणने जाम्बवान् के पास पहुंचकर उनसे हनुमान् का ठिकाना पूछा। वे सब हनुमान् को साथ लेकर रामके पास उठे चले आए जहाँ वे लक्ष्मणको गोद में लिए बैठे विलाप कर रहे थे। रामके कहनेसे वे सुषेण नामक वैद्यको लंकासे बुला लाए। उसके कहनेसे द्रोहिण पर्वतसे संजीवनी बूटी लानेके लिए

हनुमान् चल पड़े । रामने उनसे कहा कि तुम अयोध्या होकर जाओगे तो सबका कुशल भी लेते आना। सुषेणको लंकामें पहुँचाकर हनुमान् उड़ चले। द्रोणाचलपर बूटी न पहचान सकनेके कारण वे उस पर्वतको ही उखाड़े लिए चल पड़े। जिस समय वे अयोध्याके ऊपरसे उड़े चले आ रहे थे उस समय भरत बैठे हुए शान्ति-यज्ञ कर रहे थे। पर्वत लिए हुए हनुमानको देखकर उन्होंने जो बिना फलका बाण चलाया तो 'हा राम, हा लक्ष्मण' कहकर हनुमान् अचेत होकर गिर पड़े। उन्हें पहचान लेनेपर भरतको बड़ा दुःख हुआ। हनुमान् ने कहा कि मुझे झटपट रामके पास भेज पहुँचाइए। भरतने जब उन्हें अपने बाणपर चढ़ा लिया तब भरतकी प्रशंसा करके बाणसे उतरकर हनुमान्ने कहा कि मैं रामके प्रतापसे ही वहाँ पहुंचा जाता हूँ। मार्गमें मायाके महर्षि बने हुए कालनेमिको मारकर और मकरीका रूप धारण करनेवाली राक्षसीको पछाड़कर हनुमान् रामके पास जा पहुँचे । उस बूटीसे चेतन होकर लक्ष्मण इस प्रकार उठ बैठे मानो कुछ हुआ ही न हो। यह देखकर तो रामने लक्ष्मणको हृदयसे उठा लगाया और हनुमान् को बहुत साधुवाद दिया।

इस बीच रावणने रोहिताक्षको रामके पास भेज कहलाया कि आपने परशुरामको जीतकर शिवजीकी कृपासे जो परशु (फरसा) पाया है वह यदि मुझे दे दें तो मैं अभी सीताको लौटाए देता हूँ। किन्तु रामने यह स्वीकार नहीं किया और वे इन्द्रके भेजे हुए रथपर चढ़कर और हनुमानको ध्वजापर बैठाकर युद्ध के लिये चल दिए।

रामकी सेनाका विवरण सुनकर रावणने मन्दोदरीसे पूछा- तुम कहो तो रामको जानकी दे दूं या कहो तो उनके हाथसे मरकर स्वर्ग चला जाऊँ। मन्दोदरीने हँसकर कहा कि आज जो बुद्धि आपमें जाग उठी है वह सारा कुल नष्ट होनेपर कहाँसे आ पधारी ? अब आप घर में बैठ रहिए, मुझे युद्ध करनेकी आज्ञा दीजिए। इसपर रावण बहुत लज्जित हुआ और युद्धके लिये निकल पड़ा। राम और रावणका बड़ा प्रचण्ड युद्ध छिड़ गया जिसके लिये कहा गया है कि जैसे आकाश आकाशके समान और समुद्र समुद्रके समान है वैसे ही राम-रावणका युद्ध भी राम-रावणके युद्धके ही समान है। उसकी उपमा नहीं दी जा सकती-

गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमम् । रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव॥

उसी समय त्रिजटा और सरमाने अशोक-वाटिकामें खड़े हुए विमानपर सीताको बैठाकर राम और रावणका वह युद्ध ले जा दिखाया। रामने नौ बाणोंसे रावणके नौ सिर जब काट गिराए तब उसके दूसरे नौ सिर निकल आए। यह देखकर रामने उसपर ब्रह्मास्त्र उठा चलाया और रावण मरकर धरतीपर आ गिरा। रावणके मरते ही मन्दोदरी आदि उसकी सब रानियाँ रोने-बिलखने लगीं । उधर लक्ष्मण और हनुमान् जाकर सीताको विमानमें बैठाकर रामके पास लेते आए। उनके आनेपर रामने कहा कि यद्यपि सीता पतिव्रता हैं किन्तु बिना परीक्षाके वे मुझे नहीं छू सकती हैं। तत्काल सीताने जलती हुई अग्निसे कहा - यदि मैंने मन, वचन, शरीरसे जागते और सोते कभी रामके अतिरिक्त किसी दूसरे में पतिभाव रक्खा हो तो आप मुझे भस्म कर डालें। यह कहकर वे अग्नि में जा कूदी और अग्नि तत्काल शीतल हो गई। उसी समय मन्दोदरीने भी आकर रामसे पूछा कि अब मेरी क्या गति होगी : रामने कहा कि तुम विभीषणके घरमें रहकर लंकाका राज्य भोगो। यह कहकर उन्होंने बिभीषणको लंकाका राज्य दे दिया और फिर सीताको पुष्पक विमानपर बैठाकर युद्ध-भूमि ले जा दिखाई। इतना ही नहीं, उन्होंने सारी कथा भी कह सुनाई कि हम लोग कैसे दण्डकारण्यसे लंका पहुँच पाए थे।

इसके पश्चात् वे पुष्पक विमानपर बैठकर अयोध्याकी ओर चल दिए। सीताके मुखचन्द्रके कारण समुद्रमें ज्वार आनेसे उनका बनाया हुआ पुल लहरोंसे ढक गया था। इधर सीता बार-बार पूछे जा रही थीं कि आपका वह पुल कहाँ

चला गया। जब रामने सीताका मुंह अपने हाथसे उठा ढका तब ज्वार हट जानेपर पुल दिखाई देने लगा। अपने साथ वीर वानरोंको लेकर जब राम अयोध्या पहुँचे तब भरत आदि बन्धु-बान्धवों तथा मुनियों ने उनका स्वागत करके तभी उनका राज्याभिषेक कर दिया।

उसी समय अचानक अंगद उछलकर उठ खड़ा हुआ और ताल ठोककर क्रोधसे बोला कि अबतक आप जो कुछ कहते रहे, मैं कान दबाकर करता रहा किन्तु आपने मेरे निरपराध पिताको मारा है, इस वैरको मैं कभी नहीं भूल सकता। इसलिये आप, लक्ष्मण और हनुमान् अपनी सारी वानरसेनाके साथ भी आ जायँ तो भी मैं अकेला ही अपनी भुजाओंसे सबको मथे डाले देता हूँ। अंगदकी यह बात सुनकर राम और वानर-सेनाके स्वामी तौ बड़े क्षुब्ध हो उठे कि इसे हो क्या गया है। किन्तु लक्ष्मण हाथ जोड़कर उसके सामने आ पहुँचे कि बाली सचमुच निरपराध मारा गया था। उसी समय आकाशवाणी हुई कि जब मथुरामें कृष्णका अवतार होगा तब बाली ही (जरा नामक) व्याधका रूप धारण करके कृष्ण-रूपवाले रामका वध करेगा। यह सुनकर तथा राम और वानरोंको अञ्जलि बाँधे देखकर अंगदने लड़नेका विचार छोड़ दिया और रामकी बड़ी स्तुति की।

[यह प्रसंग हनुमन्नाटकको छोड़कर अन्य किसी भी रामायण में उपलब्ध नहीं है।]

इसके पश्चात् हनुमान् ने रामकी बड़ी स्तुति की और रामने वीर वानरोंकी उस सेनाको वस्त्र और आभूषण देकर बिदा कर दिया।

राज्याभिषेकके बहुत दिनों पश्चात् जब रामने लक्ष्मणके द्वारा सीताको वनमें ले जा छुड़वाया तब लक्ष्मणको बड़ा शोक हुआ और वे विलाप करने लगे।

[यहीं हनुमन्नाटक समाप्त हो जाता है।]

[किसीने भी प्रामाणिक रूपसे यह नहीं लिखा कि यह नाटक कब लिखा गया। इस महानाटकके अन्तमें यह श्लोक दिया हुआ है-

रचितमनिलपुत्रेणाथ वाल्मीकिनाब्धौ निहितममृतबुद्ध्या प्राङ्महानाटकं यत्।
सुमतिनृपतिभोजेनोद्धृतं तत्क्रमेण ग्रथितमवतु विश्वं मिश्रदामोदरेण॥

यह महानाटक स्वयं हनुमान् ने रचा था। उसे अपने रामायणसे श्रेष्ठ समझकर हनुमान् की आज्ञासे वाल्मीकिने उसे समुद्र में फेंक डलवाया जिसे किसी-किसी प्रकार बुद्धिमान् राजा भोजने समुद्रमेंसे निकलवाया और दामोदर मिश्रने उसे क्रमसे लगाया।]

गोस्वामी तुलसीदासने अपने रामचरितमानसमें अंगद-रावण संवाद आदि कई प्रसंग और कुछ उद्धरण ज्योंके त्यों अपने रामचरितमानसमें ले लिए हैं। हनुमन्नाटककी कथाके अनेक प्रसंग ऐसे हैं जो अन्य किसी रामायणमें प्राप्त नहीं होते। इस बातका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता कि राजा भोजने कब किस रूपमें समुद्रसे इसका उद्धार किया। कहा जाता है कि हनुमानने शिलाओंपर यह रामचरित लिखा था। उन शिलाओंमेंसे जो शिलाएँ मिल सकी उन्हें धाराधीश्वर महाराज भोजने दामोदरमिश्रसे संकलित कराकर हनुमन्नाटकके रूपमें प्रस्तुत कर दिया है।]

॥श्रीहनुमन्नाटककी रामायणकथा पूर्ण॥